# गांधीवादी चरण के दौरान महिलाओं की भूमिका

प्रियंका रानी*

***Email ID**: priyankapatter47543@gmail.com*

**Accepted**: 10.12.2022 **Published**: 01.01.2023

**मुख्य शब्दः** स्वतंत्रता, राष्ट्रवादी, भारतीय।

**शोध आलेख सार**

*स्वतंत्र भारत के संघर्ष के अनकहे, अनसुने और अनदेखे तथ्य। स्वतंत्रता संग्राम की यात्रा में भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका। पुरुष स्वतंत्रता सेनानी द्वारा निभाई गई प्रमुख भूमिका के बारे में हर कोई बोलता है। हालाँकि, महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बिना स्वतंत्र भारत प्राप्त करना एक सपना ही रहेगा। दूसरे नागरिक माने जाने से लेकर घरेलू हिंसा का शिकार होने, अशिक्षित आबादी, सती प्रथा का पालन करने से लेकर खुद को महान स्वतंत्रता सेनानी नेताओं में बदलने तक बहुत सारे लोग अनजान बने हुए हैं। असहयोग आंदोलन का हिस्सा बनने से लेकर सत्याग्रह करने और खादी को बढ़ावा देने और शराब की दुकानों पर धरना देने तक की इस यात्रा में भारतीय महिलाओं ने एक प्रभावशाली भूमिका निभाई है। उषा मेहता, राजकुमारी गुप्ता, अरुणा आसफ अली, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी गाइदिन्ल्यू, अमल प्रभा दास, अजीजम बाई, गुलन कौर, सरोजिनी नायडू जैसी महिलाओं ने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने में सर्वोपरि भूमिका निभाई है। सभी स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण और सम्माननीय है।*

**पहचान निशान**

**Corresponding Author*

*© IJRTS Takshila Foundation, प्रियंका रानी, All Rights Reserved.*

## परिचय

भारत का अनकहा इतिहास, भारत में स्वतंत्रता संग्राम की यात्रा में महान महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका को हम अपने इतिहास की किताबों में नहीं पाते हैं। इतिहास प्रख्यात पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से भरा पड़ा है। वास्तव में महिला आंदोलनों और महिला स्वतंत्रता सेनानी की मदद के बिना एक स्वतंत्र भारत की सफलता एक सपना बनकर रह जाती। जब महान स्वतंत्रता सेनानी जेल में थे, तब इन महिला समूहों

और व्यक्तिगत महिलाओं ने बाहर आकर पहल की और सर्वोपरि भूमिका निभाई। भारत एक ऐसा देश है जो लोगों के संस्कारों, जाति, लैंगिक असमानता और रूढ़िवादी प्राकृतिक द्वारा समर्थित है। स्वतंत्रता–पूर्व युग में महिलाओं को पुरुषों के लिए गौण माना जाता था, संक्षेप में द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में संदर्भित किया जाता था, जिनकी जिम्मेदारी घरेलू काम और बच्चों को जन्म देने के दौरान उनके घर की चार दीवारी के अंदर रखी जाती थी, बाहरी दुनिया से अनजान, महिलाएं जहाँ उन्हें शिक्षित नहीं किया गया था और उन्हें कोई कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया था, वैदिक काल के दौरान भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा सुलभ थी, जो धीरे–धीरे वर्षों में अपना महत्व खोती गई। महिलाएं दहेज मृत्यु, घरेलू हिंसा, ऑनर किलिंग, बाल विवाह, विधवाओं के खुले उत्पीड़न, विधवा पुनर्विवाह का विरोध, पर्दा प्रथा के वर्चस्व की शिकार थीं। आधुनिक युग की अवधि के लिए। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान राजा राम मोहन राय, ज्योतिबा फुले और ईश्वर चंद्र विद्या सागर जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति के उत्थान में कई चुनौतियों का सामना किया और भारत में सती प्रथा को समाप्त कर दिया। रानी लक्ष्मी भाई जैसी कई प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। हम 1817 में वापस जा सकते हैं जहां स्वतंत्रता के खिलाफ संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी तब शुरू हुई जब ब्रिटिश के खिलाफ देश की आजादी के लिए लड़ने वाली भीमा बाई होल्कर, 1857 के विद्रोह के बाद अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए लड़ने वाली मैडम भिकाजी कामा पहली महिला समाजवादी थीं। साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में महिलाओं का योगदान बहुत बड़ा है। भारत में महिलाओं को अपने लोगों के लिए स्वतंत्रता लाने के लिए अत्यधिक यातना, कठिनाई और शोषण से गुजरना पड़ा। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा दिया गया बलिदान अकल्पनीय है और इसे अत्यधिक महत्व दिया जाता है। विभिन्न घटनाओं में निभाई गई भूमिका जिसमें प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857–58), जलियांवालाबाग नरसंहार (1919), शुरू किया गया असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा दांडी मार्च (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) शामिल हैं। ). जीवन के सभी क्षेत्रों की महिलाएँ, विभिन्न जाति, धर्म समुदाय और ग्रामीण जीवन से शिक्षित और उदार परिवारों की महिलाएँ अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए लड़ने के लिए एक साथ आईं। हालाँकि किताबों में बहुत कम नामों का उल्लेख है और 100 से अधिक महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया और अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। भारत एक पुरुष प्रधान समाज होने के नाते महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में बहुत कम बात करता है जो अपने बलिदान के लिए अत्यधिक सम्मान और सम्मान की पात्र हैं।

**गांधीवादी चरण के दौरान महिलाओं की भूमिका**

रानी लक्ष्मी बाईरू भारतीय इतिहास ने अभी तक रानी लक्ष्मी बाई जैसी बहादुर और शक्तिशाली महिला योद्धा नहीं देखी है। वह देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का एक शानदार उदाहरण है। वह बहुत से लोगों के लिए एक प्रेरणा और प्रशंसा हैं। इस प्रकार उनका नाम भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है।

कमलादेवी चट्टोपाध्यायरू 1930 के दशक में उन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उसने हस्तशिल्प, हथकरघा और रंगमंच को बढ़ावा दिया। भारत सरकार ने उन्हें 1955 में पद्म भूषण और 1987 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

एनी बसंत वह 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली अध्यक्ष बनीं। उनके सहयोगी मार्गरेट चचेरे भाइयों ने भारतीय महिलाओं के मतदान अधिकार विधेयक का मसौदा तैयार किया और ष्महिला भारतीय संघ का शुभारंभ किया।

विजयलक्ष्मी पंडितरू श्रीमती पंडित को 1932, 1940 और 1942 में तीन बार उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए जेल में डाल दिया गया था। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने जुलूसों का नेतृत्व किया और अपनी बहन और अपनी बेटियों के साथ शराब और विदेशी कपड़े बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। उन्होंने कई लड़ाइयाँ लड़ी हैं और भारत में महिलाओं के लिए कई बाधाओं को तोड़ा है।

दुर्गाबाई देशमुखरू नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए उन्हें तीन साल की कैद हुई थी। इस सत्याग्रह के दौरान जब दक्षिण में राजाजी और टी. प्रकाशम जैसे नेता आंदोलन के अन्य तथ्यों को संगठित करने में व्यस्त थे, वह दुर्गाबाई ही थीं जिन्होंने नमक कानून तोड़ने वालों के एक समूह का नेतृत्व मद्रास के मरीना बीच तक किया। उन्होंने बहुत कम उम्र में श्आंध्र महिला सभाश और शहिंदी बालिका पाठशालाश शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मृदुला साराबाईरू विभाजन के दौरान भीड़ द्वारा अगवा की गई लड़कियों को बचाने और शरणार्थियों, हिंदू और मुस्लिम दोनों को चोट लगने या मारे जाने से बचाने के लिए उन्होंने बड़े व्यक्तिगत जोखिम पर लड़ाई लड़ी। 1934 में वह गुजरात से एक प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिए चुनी गईं।

बसंती दासरू वह भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थीं। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने स्वयं स्वतंत्रता गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया और असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1973 में उन्हें पद्म विभूषण मिला।

सुचेता कृपलानीरू 1932 में, उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और 1939 में राजनीति में प्रवेश किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं। 1940 में, उन्होंने फैजाबाद में व्यक्तिगत सत्याग्रह की पेशकश की और उन्हें दो साल की कैद हुई। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, वह भूमिगत हो गईं और गुप्त रूप से ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध का आयोजन करने की उल्लेखनीय सेवा प्रदान की।

कमला दास गुप्तारू वह भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बीच एक शानदार प्रकाशमान रही हैं। वह उग्रवादी तबके से ताल्लुक रखती है और श्युगांतर पार्टीश की सक्रिय सदस्य थी। 1942 में, उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया और प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया।

डॉ. एस. मुथुलक्ष्मी रेड्डीरू वह पहली भारतीय महिला थीं, जिन्हें समाज सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी योग्यता और सेवाओं के लिए 1926 में मद्रास विधान सभा के लिए नामांकित किया गया था। महिलाओं पर अत्याचार और महिलाओं के खिलाफ दमनकारी उपायों के इस्तेमाल के विरोध के रूप में नमक सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों, उन्होंने अपने कार्यालयों से इस्तीफा दे दिया और स्वतंत्रता संग्राम में कूद गईं।

मार्गरेट कजिन्सरू एक आयरिश महिला धर्मयुद्ध, आयरलैंड में महिलाओं के लिए मतदान के अधिकार के लिए लड़ने के बाद, अपने पति के साथ भारत पहुंची और भारतीय महिलाओं के लिए समान कारणों की वकालत की। उन्होंने एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू के साथ हाथ मिलाया और उनमें जागृति लाने के लिए कई महिला संघों की स्थापना में मदद की।

राज कुमारी अमृत कौररू वह कपूरथला के शासक घराने से ताल्लुक रखती हैं। वह गांधी से प्रेरित थीं और नमक सत्याग्रह के दौरान कांग्रेस में शामिल हो गईं। उन्हें बॉम्बे में नमक कानून का उल्लंघन करने के लिए गिरफ्तार किया गया था, जब वह स्वतंत्रता संग्राम के कारणों की वकालत करने के लिए उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत में गईं, तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और राजद्रोह के आरोप में दोषी ठहराया गया। वे सात साल तक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष रहीं।

मातंगिनी हाजरारू पश्चिम बंगाल की गांधी बुढ़ी (गांधीवादी बूढ़ी महिलाएं) वह स्वतंत्रता सेनानी और शहीद हैं जिन्हें उनके वीरतापूर्ण कार्य के लिए याद किया जाएगा। वह 1932 में स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुईं। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्हें जेल हुई। 1933 में, उन्होंने एक काले झंडे के प्रदर्शन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, जहाँ बंगाल के राज्यपाल पुलिस घेरे में सभा को संबोधित कर रहे थे। इस बार उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और छह महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की भागीदारी का पता 1817 में भीमा बाई होल्कर से लगाया जा सकता है, जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक मैल्कम के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन्हें गुरिल्ला कल्याण में हराया। कई अन्य महिलाओं जैसे कित्तूर की रानी चन्नमा, रानी ब्रगम हजरत महल ने प्रमुख भूमिका निभाई और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से 30 साल पहले 19वीं शताब्दी में ईस्ट इंडियन कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ी, 1857–58 का पहला स्वतंत्रता संग्राम भी हालांकि ब्रिटिश एक साल में युद्ध को समाप्त करने में सफल रहे। यह एक उल्लेखनीय और शानदार विद्रोह था, जिसमें भारतीय अधिकारियों, महिलाओं और मिलिशिया की भारी भागीदारी शामिल थी। रानी लक्ष्मी भाई स्वतंत्रता भारत के संघर्ष की पहली स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने लोगों को देशभक्ति, वीरता और स्वाभिमान के मूल्य का एहसास कराया। वह एक छोटे से कस्बे की रानी थी लेकिन वैभव के एक असीम साम्राज्य की शासक थी, जिसके बाद हमारे पास असहयोग आंदोलन 1920 है। महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों सहित जीवन के सभी क्षेत्रों से जहां सरला देवी, सुशीला नायर, राजकुमारी अमृत कौर, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, अरुणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी जैसी महिला नेताओं ने अहिंसक आंदोलन में भाग लिया। कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, विजया लक्ष्मी पंडित और

स्वरूप रानी राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल थीं। लाहौर में आंदोलन का नेतृत्व लाडो रानी जुत्शी और उनकी बेटी मनमोहिनी श्यामा और जनक ने किया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन और दांडी नमक मार्च 1930 – महिलाओं ने नमक, वन कानूनों को तोड़कर और प्रभात फेरी के जुलूस निकालकर, स्कूलों में धरना देकर, अपनी लड़ाई शुरू की। विधायी परिषदें, कॉलेज और क्लब। सरोजिनी नादिउ ने दांडी मार्च प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभाई और 1930, मई में धरसाना नमक वर्क्स पर छापा भी मारा। दूसरी तरफ कमला देवी ने सभाओं को संबोधित किया, नमक की व्यवस्था की और विदेशी दुकानों और शराब की दुकानों पर धरना दिया। नारी सत्याग्रह समिति, महिला राष्ट्रीय संघ और महिला धरना बोर्ड ने उस अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्रांतिकारियों का संगठन जो चीतागोंग, कोमिला और ढाका में सक्रिय था और युवा कॉलेज लड़कियों की भागीदारी शामिल थी। महिला क्रांतिकारियों के उत्कृष्ट समूह में समिति और सुनीति, कल्पना दत्ता, बीना दास और प्रेसतिलता वाडेदार शामिल थीं। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन जिसमें अधिकतम महिला सशक्तिकरण शामिल था और यह ब्रिटिश सैनिकों के भारत छोड़ने के खिलाफ सीधा था जिसमें उषा मेहता जैसे स्वतंत्रता सेनानी शामिल हैं, एक देशभक्त जिसने वॉयस ऑफ फ्रीडम नामक एक रेडियो ट्रांसमीटर स्थापित किया था जो स्वतंत्रता के मंत्र का प्रचार करता था युद्ध। गांधी लोकप्रिय करो या मरो, विरोध और गिरफ्तारी के बारे में समाचार, युवा राष्ट्रवादी द्वारा गतिविधियां और अन्य संदेश जहां उषा मेहता और उनके भाई द्वारा गिरफ्तार किए जाने तक जनता के बीच फैलाया गया। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के लिए स्वदेशी आंदोलन, जलियाँवालाबाग नरसंहार और अन्य आंदोलनों में भी महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

महिलाओं के योगदान का उल्लेख किए बिना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा रहेगा। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को नई पंक्ति में अग्रणी स्थान मिलेगा। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नारी के त्याग, निस्वार्थता, शौर्य की गाथाओं से भरा पड़ा है। हम में से बहुत से लोग नहीं जानते कि ऐसी सैकड़ों महिलाएँ थीं जो अपने पुरुष समकक्षों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ीं। वे सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़े। भारतीय महिलाओं ने विभिन्न प्रतिबंधों को तोड़ दिया और अपनी पारंपरिक गृह–उन्मुख भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से बाहर निकल गईं। इसलिए, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में महिलाओं की भागीदारी अविश्वसनीय और प्रशंसनीय है। हालाँकि, पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए योद्धा के रूप में लड़ना आसान नहीं है। भले ही महिलाओं ने ऐसे रूढ़िवादी लोगों की धारणा को बदलने की कोशिश की जो सोचते थे कि महिलाएं केवल घर के काम करने के लिए होती हैं। इसके अलावा, महिलाएं न केवल अपने जीवन का त्याग करती हैं बल्कि ऐसे मुद्दों का मुकाबला भी करती हैं।

स्वतंत्रता–पूर्व काल में देश में महिलाओं की स्थिति वंचित अवस्था में थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि यहाँ पुरुष प्रधानता का प्रचलन था। महिलाओं की प्रमुख जिम्मेदारियां घरेलू जिम्मेदारियों के कार्यान्वयन के लिए समर्पित थीं और उन्हें अन्य कार्यों और गतिविधियों के कार्यान्वयन में भाग लेने की अनुमति नहीं थी,

कहीं भी उन्हें अपने विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। इस अवधि के दौरान, कई प्रणालियाँ लागू की गईं, जिनका महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इनमें बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, सती और बहुविवाह पर प्रतिबंध शामिल हैं।

गांधी निस्संदेह हमारे समय में भारत के ज्ञान और संस्कृति के सबसे प्रामाणिक और प्रतिष्ठित प्रतिनिधि थे। उनके देशवासी उन्हें महात्मा कहकर सम्मान से संबोधित करते हैं। वे एक समाज सुधारक, एक अर्थशास्त्री, एक राजनीतिक दार्शनिक और सत्य के साधक थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जनता की कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बना दिया। उन्होंने लोगों को निडर और निर्भीक बनाया और उन्हें अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए अहिंसक तरीका सिखाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि उन्होंने अकेले ही भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया था। गांधी की शांतिपूर्ण और अहिंसक तकनीकों ने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनाया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन 1918 और 1922 के बीच चरम पर था। गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन के अहिंसा अभियान की एक श्रृंखला शुरू की गई थी। मुख्य फोकस असहयोग के माध्यम से ब्रिटिश सरकार को कमजोर करना था।

गांधी ने जाति, भेदभाव, बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई छेड़कर और महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करके महिलाओं को सशक्त और प्रेरित किया था। वे महिलाओं को भारी संख्या में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

असहयोग आंदोलन अभूतपूर्व महिला सक्रियता का गवाह है, विशेष रूप से शिक्षित और मध्यम वर्ग की। अमृत कौर, अरुणा आसफ, सरला देवी और मुथुल लक्ष्मी रेड्डी प्रमुख नेता के रूप में उभरे।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गांधीवादी आदर्शों से प्रेरित सरोजिनी नायडू ने गांधी की गिरफ्तारी के बाद भी नमक कानून, करों के खिलाफ धरसाना साल्ट वर्क्स में शांतिपूर्ण विरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने मतदान के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी और उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष के रूप में चुना गया।

भारत छोड़ो आंदोलन में उषा मेहता, अरुणा आसफ अली के नेतृत्व में भूमिगत सक्रियता आंदोलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण थी।

1920 के राजनीतिक परिदृश्य में अधिकतर महिलाएं भाग लेती हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में महिलाएं आगे आईं।

इस प्रकार, सामाजिक–आर्थिक उत्पीड़न की बाधाओं को तोड़कर भारतीय महिलाएं सामूहिक कार्रवाई की क्षमता का एहसास करने के लिए एक साथ आई हैं और स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण की नींव रखी है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की कहानी साहसिक विकल्प बनाने, खुद को सड़कों पर, जेल के अंदर और विधायिका में खोजने की कहानी है। इतने प्रयासों के बाद 15 अगस्त, 1947 को

भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हजारों भारतीय महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। जिस अहिंसक आंदोलन ने भारत को आजादी दिलाई, वह न केवल महिलाओं को साथ लेकर चला बल्कि अपनी सफलता के लिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर था। शायद दुनिया के इतिहास में पहली और एकमात्र बार, एक शक्तिशाली वैश्विक साम्राज्य की शक्ति, जिस पर सूरज कभी अस्त नहीं हुआ था, को केवल शांति, विचारों और साहस से लैस लोगों की नैतिक शक्ति से चुनौती दी गई और पराजित किया गया।

**निष्कर्ष**

अगर हम महिला स्वतंत्रता सेनानी के बारे में बात करते हैं तो हमारे पास एक स्वतंत्र भारत की स्वतंत्रता संग्राम यात्रा के हिस्से के रूप में 100 से अधिक व्यक्ति और करोड़ हैं, नेता जैसे माताती चौधरी, सुभद्रा जोशी, बसंती सेन, अहसलता सेन, कनखलत बरुआ, तारा रानी श्रीवास्तव, कमलादेवी चट्टीपाध्याय , मूलमती, दुर्गाबाई देशमुक, रुक्मिणी लक्ष्मीपति। तारकेश्वरी सिन्हा, आबादी बानो बेगम, कुंतला कुमारी साबत, इंदिरा गांधी, नलिनीबाला देवी, अक्कम्मा चेरियन, एवी कुट्टीमालू अम्मा, चंद्रप्रवा सैकियानी, अमल प्रभा दास, अजीजम बाई, गुलन कौर, भोगेश्वरी फुखानई, भीमाबाई होल्कर, सिवरिन स्वेर, रानी वेलु नचियान, महारानी जींद कौर, प्रीतिलता वाडेदार, हंसे मेहता, सिस्टर निवेदिता, सुभद्रा कुमारी चौहान और कई अन्य जिन्होंने इस यात्रा में अपने जीवन को त्याग दिया और बेशुमार शोषण, कठिनाई और यातना का अनुभव किया। महिलाएं भारतीय उपमहाद्वीप में एक बड़ी आबादी बनाती हैं और आधुनिक भारत के लिए काफी हद तक शिक्षा, रोजगार के अवसर जाति व्यवस्था और पर्दा व्यवस्था को समाप्त करती हैं।

**संदर्भ**


- डॉक्टर अल्ताफ खान स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में महिलाओं की भूमिका, माधव विश्वविद्यालय।
- आजादी के 70 साल, इन महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने रखी थी भारत की आजादी की नींव 2017. अगस्त, न्यूज नेशन ब्यूरो।
- शैली रानी, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 2020 8(4)।
- राज कुमार। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका। 2003, आईएसबीएन – 978–8171323227।
- ए बसु। भारत में नारीवाद और राष्ट्रवाद। 1917–1947। महिला इतिहास का जर्नल, 1995, 7 (4)।
- मंगला सुब्रमण्यन. भारतीय महिला आंदोलन। सेज जर्नल, 2004।

- वेंकटरमन वी, लिलिट डी। राष्ट्रीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं, एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल। 2017य 12 (12)।
- कानू डी द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी की भूमिका
- खान, यास्मीन (2017)। द ग्रेट पार्टीशन द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान। येल यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 18. आईएसबीएन 978–0–300–12078–3।
- कुश, डेनिसय रॉबिन्सन, कैथरीनय यॉर्क, माइकल (2018)। हिंदू धर्म का विश्वकोश। टेलर और फ्रांसिस। पी। 544. आईएसबीएन 978–0–7007–1267–0।